काव्यगुण (काव्यप्रकाश)

प्रस्तोता – अरुण पाण्डेय

काव्यगुण

ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।

उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः ।।

जिस प्रकार आत्मा का शौर्य आदि गुण आत्मा से पृथक् नहीं अवस्थित होते हैं तथा आत्मा के उत्कर्ष हेतु होते हैं। उसी तरह रस के भी जो उत्कर्ष हेतु हैं तथा रस से जिनकी अन्यत्र स्थिति नहीं है वे गुण कहे जाते हैं।

माधुर्यौजःप्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश।

वे गुण **माधुर्य**, **ओज** और **प्रसाद** भेद से तीन ही हैं दश नहीं।

केचिदन्तर्भवन्त्येषु दोषत्यागात्परे श्रिताः।
अन्ये भजन्ति दोषत्वं कुत्रचित् न ततो दश ॥

॥ अर्थ ॥

- ओज ,प्रसाद, श्लेष, समता, समाधि, माधुर्य, सौकुमार्य, उदारता, अर्थव्यक्ति और कान्ति ये जो दश गुण वामन ने कहे हैं उनमें से कुछ तो माधुर्य, ओज और प्रसादरूप तीन गुणों में ही अन्तर्भूत हो जाते हैं । और कुछ गुण नही हैं केवल दोषाभावरूप हैं, कुछ तो कहीं कहीं दोष ही हैं अतः १० गुण नहीं हैं ।

माधुर्य

आह्लादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम् ।
करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम् ॥

✓ शृङ्गार रस के आस्वाद से जो (मन को पिघलाने वाला) आह्लाद या आनन्द अनुभूत होता है वही माधुर्य है। वह शृङ्गार रस में स्थित होता है। शृङ्गार की अपेक्षा करुण में , तथा करुण की अपेक्षा विप्रलम्भ में और विप्रलम्भ की अपेक्षा शान्त रस में अधिक माधुर्य होता है। अब यह माधुर्य गुण कब अभिव्यक्त होता है उसका निरूपण करते हैं -

मूर्ध्नि वर्गान्त्यगाः स्पर्शा अटवर्गा रणौ लघू ।
अवृत्तिर्मध्यवृत्तिर्वा माधुर्ये घटना तथा ॥

✓ जिसमें टवर्ग को छोडकर कोई भी स्पर्श (वर्गीय व्यञ्जन) वर्ण अपने अन्तिम(ङ् , ञ्, ण्, न्, म्) वर्ण से युक्त हों , तथा र् और ण् ह्रस्व वर्ण से युक्त हों , समास न हों अथवा मध्यम समास हो तो ऐसी रचना माधुर्य गुण से युक्त होती है। जैसे –

अनङ्गरङ्गप्रतिमं तदङ्गं
भङ्गीभिरङ्गीकृतमानताङ्ग्याः।
कुर्वन्ति यूनां सहसा यथैताः
स्वान्तानि शान्तापरचिन्तनानि ॥

ओज

दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतुरोज वीररसस्थिति ।

बीभत्सरौद्ररसयोस्तस्याधिक्यं क्रमेण च ॥

- ओज गुण से सामाजिक हृदय की शीतलता नष्ट हो जाती है और हृदय प्रज्वलित हो जाता (धधक उठता) है । यह मुख्यत: वीर रस में रहता है किन्तु वीर की अपेक्षा बीभत्स में, बीभत्स की अपेक्षा रौद्र रस में अधिक ओज गुण रहता है । ओज गुण कब अभिव्यक्त होता है उसका वर्णन करते हैं जैसे -

योग आद्यतृतीयाभ्यामन्त्ययोरेण तुल्ययो: ।

टादि: शषौ वृत्तिदैर्घ्यं गुम्फ उद्धत ओजसि ॥

✓ वर्ग के प्रथम (क् च् ट् त् प्) के साथ द्वितीय (ख् छ् ठ् थ् फ्) का तथा वर्ग तृतीय (ग् ज् ड् द् ब्) के साथ चतुर्थ (घ् झ् ढ् ध् भ्) का योग हो , तथा रेफ (र्) का ऊपर अथवा नीचे योग हो, ट् ठ् ड् ढ् श् और् ष् वर्णों का अधिकता से प्रयोग हो , दीर्घ (बडे- बडे) समास हों तो ओज गुण अभिव्यक्त होता है। जैसे –

मूर्ध्नामुद्वृत्तकृत्ताविरलगलगलद्रक्तसंसक्तधारा-

धौतेशाङ्घ्रिप्रसादोपनतजयजगज्जातमिथ्यामहिम्नाम्।

कैलासोल्लासनेच्छाव्यतिकरपिशुनोत्सर्पिदर्पोद्धुराणां

दोष्णां चैषां किमेतत् फलमिह नगरीरक्षणे यत् प्रयासः॥

प्रसाद

शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः ।
व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः ॥

- जिस तरह सूखे ईंधन में अग्नि साफ कपडे में पानी शीघ्र ही व्याप्त हो जाता है उसी तरह प्रसाद गुण सभी रसों में व्याप्त होता है । प्रसाद गुण कब अभिव्यक्त होता है उसका निरूपण करते हैं । -

श्रुतिमात्रेण शब्दात्तु येनार्थप्रत्ययो भवेत् ।
साधारणः समग्राणां स प्रसादो गुणो मतः ॥

✓ ऐसी वर्ण रचना या समास जिसके श्रवण मात्र से ही अर्थ प्रतीत हो जाये, वह सभी रसों में साधारण (दिखाई देने वाला) गुण प्रसाद है।
जैसे –

परिम्लानं पीनस्तनजघनसंगादुभयत-
स्तनोर्मध्यस्यान्तः परिमिलनमप्राप्य हरितम्।
इदं व्यस्तन्यासं श्लथभुजलताक्षेपवलनैः
कृशाङ्ग्याः सन्तापं वदति बिसिनीपत्रशयनम्॥

धन्यवादः